संसपज ळंतह

म्253ऐैंतूंजपझ्नदर ।चचंतजउमदजे
25ए ण्च्ण्म्ग्जमदण्ब्ंजचंतहंदरएक्मसीप.92
चीवदमरू22727486एडवइण्9811051133
म.डंपस रू संसपजहंतह11ध्विजउंपसण्बवउ

नई दिल्ली
20—08—2011

माननीय महोदय,

प्रस्तुत पत्र के साथ आचार्य श्री महाश्रमण लेख ' **पर्युषण** : आध्यात्मिक ऊर्जा की आराधना का पर्व' विषयक आपको प्रेषित कर निवेदन है कि यह लेख आपके समाचार पत्र में दिनांक **14 अगस्त से 22 अगस्त 2012**, **पर्युषण महापर्व** के अवसर पर आपके समाचार पत्र में प्रकाशित करने की कृपा करें।

लेख अप्रकाशित है, प्रकाशित अंक की एक प्रति अवश्य भिजवाएँ।

आभार !

आपका

(ललित गर्ग)

संलग्न : उपरोक्तानुसार

पर्युषण महापर्व (14 अगस्त से 22 अगस्त 2012) पर प्रकाशनार्थ

पर्युषण
आध्यात्मिक ऊर्जा की आराधना का पर्व

—आचार्य महाश्रमण—

जैन धर्म आत्मवादी धर्म है। आत्मा उसका केन्द्रीय तत्व है। जैन आचार और विचार की प्रायः सभी अवधारणाएं उसी की परिधि में अवस्थित हैं। जैन दर्शन में प्रत्येक आत्मा का स्वतंत्र और त्रैकालिक अस्तित्व सम्मत है। वह सदा थी, सदा है और सदा रहेगी। वह अपने मूल स्वरूप में शुद्ध, अमूर्त, ज्योतिर्मय और निरामय है। वह अपने उत्तर अथवा आरोपित स्वरूप में अशुद्ध, मूर्त, अंधकारमय और सामय (सरोग) भी है। वह सुख—दुख का अनुभव करती है। वह स्वयं उसकी विधाता है। वह नाना योनियों में परिसंचरण करती हुई कभी मनुष्य योनि में भी पहुंच जाती है। मनुष्य जन्म रूपी वृक्ष के छह फल बताए गए हैं—

जिनेन्द्रपूजा गुरुपर्युपास्तिः, सत्वानुकंपा शुभपात्रदानम्।
गुणानुरागः श्रुतिरागमस्य, नृजन्मवृक्षस्य फलान्यमूनि।।

1. जिनेन्द्रपूजा—वीतराग तीर्थंकरों के प्रति भक्ति। 2. गुरु—उपासना—धर्मगुरुओं की उपासना—सेवा। 3. सत्त्वानुकंपा—प्राणियों के प्रति दया—भाव। 4. शुभपात्रान—सुपात्र दान। 5. गुणानुराग—गुणों के प्रति अनुराग, आकर्षण। 6. आगमश्रुति—आगमों, धर्मशास्त्रों का श्रवण। इन छह बातों का आचरण जीवन में होना चाहिए।

व्यक्ति सुखेच्छु होता है। सुख प्राप्ति के लिए वह कृतसमर्पण बना रहता है। वह सुख प्राप्ति के लिए संकल्प और प्रयास करता है, पर कई बार दुख के आवर्त में भी फंस जाता है। स्थाई और निरपेक्ष सुख की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग अध्यात्म है। उसकी आराधना सदैव की जानी चाहिए, परन्तु उसकी सघन साधना सबके लिए सदा संभव नहीं। इसलिए धर्माराधना के लिए कुछ दिनों के विशेष रूप से निर्धारित किया गया है। जैन श्वेताम्बर परम्परा में 'पर्युषण पर्व' और दिगम्बर परम्परा में 'दशलक्षण–पर्व' विशेष धर्माराधना का समय है।

इसमें भी सर्वाधिक महत्व और मूर्धन्य स्थान 'संवत्सरी महापर्व' को प्राप्त है।

'संवत्सरी की तैयारी स्वरूप पूर्ववर्ती सात दिनों में भी विशेष रूप से प्रवचन व धर्माराधना का कार्यक्रम चलता है।

संवत्सरी मैत्री पर्व के रूप में भी प्रख्यात है। इस दिन वैमनस्य को सौमनस्य में हृदय से रूपांतरित किया जाए तो इस पर्व को मनाने की अधिक सार्थकता है। सदा सौमनस्य को पुष्ट बनाए रखने का संकल्प इस दिन किया जाता है। पर्युषण–संवत्सरी की आराधना से उस आध्यात्मिक ऊर्जा को प्राप्त किया जाए जिसके आधार पर वर्ष भर की सारी गतिविधियां 'अध्यात्म–प्रभावित' रह सके, मन में क्षमाशीलता का भाव विकसित रूप में रह सके।

दशलक्षण एवं पर्युषण पर्व धर्म की प्रकृष्ट आराधना अथवा सघन आध्यात्मिक पोषण–प्राप्ति का महान अवसर होता है। यह समय प्रमुख रूप से धर्माराधना के लिए ही निर्धारित रहना चाहिए।

पर्युषण पर्व मैत्री का संदेश लेकर भी आता है। वर्ष भर न खुलने वाली गांठें भी इस पवित्र अवसर पर खुल जानी चाहिए। संवत्सरी के रोज होने वाले उपवास की ऊर्जा में वर्ष भर की वैमनस्य भस्म कर डालना चाहिए। कितना अच्छा हो कि पर्युषण पर्व से आध्यात्मिक संबल पाकर व्यक्ति पूरे वर्ष भर ऊर्जा प्राप्त करता रहे और अध्यात्म–प्रभावित आचरण उसके जीवन में दिखते रहें।

इसके लिए चार भावनाओं से चित्त को भावित करना अपेक्षित है। वे चार भावनाएं हैं–मैत्री, प्रमोद, कारुण्य माध्यस्थ।

मैत्री–दूसरों के हित का चिंतन करना, सबके साथ मैत्री का भाव रखना।

प्रमोद–किसी भी रूप में ईर्ष्या न रखना, दूसरों की उन्नति को देखकर जलन न करना/प्रसन्न होना।

कारुण्य–संक्लिष्ट अथवा दुखित जीवों के प्रति करुणा का भाव रखना, उनके मंगल की कामना करना।

माध्यस्थ–प्रतिकूल आचरण करने वालों के प्रति भी माध्यस्थता–तटस्थता का भाव रखना। उनके प्रति भी क्रोध या द्वेष न करना।

इन चार भावनाओं का व्यवहार में प्रयोग करने वाला व्यक्ति धार्मिक कहलाने का अधिकारी है, ऐसा मेरा मंतव्य है।

आत्मा की अध्यात्मभावित कर जीवन में उच्चता और गंभीरता प्राप्त करने का लक्ष्य बने। कहा भी गया है–

उच्चत्वमपरा नाद्रौ नेदं सिन्धौ गभीरता।
अलंघनीयताहेतो द्वयमेतद् मनस्विनि।।

पर्वत में ऊंचाई होती है, पर गहराई नहीं होती। समुद्र में गहराई होती है, पर ऊंचाई नहीं होती, पर मनस्वी व्यक्ति में ऊंचाई और गहराई दोनों होती हैं।

इस महापर्व से ज्ञान की गहराई और आचरण की ऊंचाई को अर्जित करने की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

प्रस्तुतिः ललित गर्ग

प्रेषकः

(ललित गर्ग)
ई–253, सरस्वती कुंज अपार्टमेंट
25 आई. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली–92
फोनः 22727486, 9811051133